21वीं सदी के प्रारंभ में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद

हमारी समझ में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कोई अलग परिघटना नहीं, साम्राज्यवाद का ही सांस्कृतिक मोर्चा है। जेम्स पैट्रास भी शायद यही सोचते हों और इस परिघटना पर आवश्यक बल देने के लिए इसे अलग से नाम दे दिया हो। (यह विवाद भी महत्त्वपूर्ण है पर इस पर कभी अलग से) इस लेख में सांस्कृतिक जगत में बढ़ते साम्राज्यवादी हमले की सूक्षमता, व्यापकता और प्रभाव का समुचित विश्लेषण है। हमें विश्वास है कि पाठक इससे उद्वेलित होंगे। प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं।

अमेरिकी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के दो प्रमुख उद्देश्य हैं: एक है आर्थिक और दूसरा राजनीतिक। अर्थात् अपने सांस्कृतिक मालों के लिए बाज़ार पर अधिकार जमाना और जनचेतना को अनुकूल बनाकर अपना आधिपत्य स्थापित करना। आज पूंजी-संचय और वैश्विक मुनाफे का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत है-मनोरंजन से संबंधित मालों का निर्यात, जो कारखानों में बने माल (मैन्युफैक्चरिंग) की जगह लेता जा रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद जनता को अपनी सांस्कृतिक जड़ों और एकजुटता की परम्परा से काट कर उसकी जगह मीडिया द्वारा पैदा की गई उन 'जरूरतों' को स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है, जो हर नए प्रचार अभियान के साथ बदलती रहती है। इसका राजनीतिक मकसद, व्यक्तियों को टुकड़े-टुकड़े में बांटकर एक-दूसरे से अलग करके, जनता को वर्ग और समुदाय के परम्परागत बंधनों से विमुख कर देना है।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद श्रमिक वर्ग के विभाजन को बढ़ावा देता है। स्थायी श्रमिकों को अस्थाई श्रमिकों से संबंध न रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अस्थाई श्रमिक अपने आप को बेरोजगारों से अलग कर लेते हैं। बेरोजगार भी ''भूमिगत अर्थतंत्र'' के भीतर आपस में कई-कई टुकड़ों में बंटे होते हैं। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद श्रमिक जनों में अपने आप को पदानुक्रम (हायरार्की) का एक हिस्सा समझने की भावना जगाता है। इसके लिए उनके और उनसे ऊपरवालों के बीच मौजूद विराट असमानता के बजाय उनसे नीचे वालों की तुलना में उनकी जीवनशैली, नस्ल, जाति और लिंग के तुच्छ अंतरों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का प्रधान लक्ष्य है, नौजवानों का राजनीतिक एवं आर्थिक शोषण। साम्राज्यवादी मनोरंजन और विज्ञापन नौजवानों को अपना निशाना बनाते हैं क्योंकि वे ही अमेरिकी व्यावसायिक प्रचार से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। उनका संदेश एकदम सरल और स्पष्ट होता है। ''आधुनिकता'' का अर्थ है, अमेरिकी मीडिया के उत्पादों का उपभोग। अमेरिका द्वारा निर्यातित सांस्कृतिक मालों के लिए युवा वर्ग एक भारी बाजार मुहैया कराता है और उपभोक्तावादी व्यक्तिवादी प्रचारों से बहुत जल्दी प्रभावित होता है। जन संचार माध्यम वामपंथी भाषा चुराकर यौवन की विद्रोही भावनाओं का चतुराई से इस्तेमाल करते हैं और उनके असंतोष को उपभोक्तावादी अतिरेक के नाले में बहा देते हैं।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद केवल बाजार के लिए ही नौजवानों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं करता, बल्कि इसके पीछे उसकी सांस्कृतिक मंशा भी होती है। वे जानते हैं कि व्यक्तिगत बगावत की चेतना कभी भी आर्थिक-सांस्कृतिक गुलामी के खिलाफ राजनीतिक विद्रोह का रूप धारण कर सकती है, अत: वे इस आशंका को निर्मूल कर देना चाहते हैं।

प्रगतिशील सांस्कृतिक आन्दोलन पिछले दशक से ही एक विरोधाभास का सामना कर रहा है। तीसरी दुनिया की जनता की विशाल बहुसंख्या लगातार गिरते जीवनस्तर, बढ़ती सामाजिक व्यक्तिगत असुरक्षा और जन सेवाओं में लगातार ह्रास को झेल रही है, जबकि दूसरी ओर गिने चुने धनाढ्यों की दौलत में दिन-दूना रात चौगुना इजाफा हो रहा है। इन परिस्थितियों के खिलाफ आत्मगत प्रतिवाद के रूप में केवल छुट-पुट विद्रोह, दीर्घकालिक स्थानीय कार्यवाइयां और छोटी अवधि के व्यापक प्रतिवाद ही हुए हैं। दूसरे शब्दों में एक तरफ बढ़ती विषमता और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में गिरावट तथा दूसरी ओर क्रांतिकारी या रेडिकल आत्मगत प्रतिवाद की दुर्बलताओं के बीच गहरी खाई मौजूद है। तीसरी दुनिया में तैयार हो रही ''वस्तुगत परिस्थितियों'' के अनुरूप ऐसी मनोगत शक्तियों का विकास नहीं हो पाया है जो राजसत्ता और समाज को बदल देने में समर्थ हों। सामाजिक, आर्थिक अध:पतन और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के बीच ''यंत्रवत्'' संबंध नहीं होता। सांस्कृतिक हस्तक्षेप (व्यापक अर्थों में विचारधारा, चेतना, सामाजिक कार्यवाई सहित) ही वस्तुगत परिस्थितियों को सचेत राजनीतिक हस्तक्षेप में बदलने वाला निर्णायक तत्व है। विडम्बना ही है कि साम्राज्यवादी नीति निर्माताओं ने राजनीतिक प्रक्रिया के सांस्कृतिक आयामों का महत्व शायद अपने विरोधियों की अपेक्षा कहीं ज्यादा बेहतर ढंग से समझा है।

"प्रगतिशील सांस्कृतिक आन्दोलन पिछले दशक से ही एक विरोधाभास का सामना कर रहा है। तीसरी दुनिया की जनता की विशाल बहुसंख्या लगातार गिरते जीवनस्तर, बढ़ती सामाजिक व्यक्तिगत असुरक्षा और जन सेवाओं में लगातार ह्रास को झेल रही है, जबकि दूसरी ओर गिने चुने धनाढ्यों की दौलत में दिन-दूना रात चौगुना इजाफा हो रहा है। इन परिस्थितियों के खिलाफ आत्मगत प्रतिवाद के रूप में केवल छुट-पुट विद्रोह, दीर्घकालिक स्थानीय कार्यवाइयां और छोटी अवधि के व्यापक प्रतिवाद ही हुए हैं। दूसरे शब्दों में एक तरफ बढ़ती विषमता और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में गिरावट तथा दूसरी ओर क्रांतिकारी या रेडिकल आत्मगत प्रतिवाद की दुर्बलताओं के बीच गहरी खाई मौजूद है। तीसरी दुनिया में तैयार हो रही ''वस्तुगत परिस्थितियों'' के अनुरूप ऐसी मनोगत शक्तियों का विकास नहीं हो पाया है जो राजसत्ता और समाज को बदल देने में समर्थ हों। यह तो यह है कि सामाजिक, आर्थिक अध:पतन और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के बीच ''यंत्रवत्'' संबंध नहीं होता। सांस्कृतिक हस्तक्षेप (व्यापक अर्थों में विचारधारा, चेतना, सामाजिक कार्यवाई सहित) ही वस्तुगत परिस्थितियों को सचेत राजनीतिक हस्तक्षेप में बदलने वाला निर्णायक तत्व है। विडम्बना ही है कि साम्राज्यवादी नीति निर्माताओं ने राजनीतिक प्रक्रिया के सांस्कृतिक आयामों का महत्व शायद अपने विरोधियों की अपेक्षा कहीं ज्यादा बेहतर ढंग से समझा है।"

सांस्कृतिक प्रभुत्व

साम्राज्यवाद को केवल शासन-शोषण की आर्थिक-सामरिक व्यवस्था के तौर पर नहीं समझा जा सकता। वैश्विक शोषण की किसी दीर्घकालिक व्यवस्था का एक अभिन्न आयाम है-सांस्कृतिक प्रभुत्व।

तीसरी दुनिया के प्रसंग में साम्राज्यवाद का अभिप्राय है पश्चिमी देशों के शासक वर्ग द्वारा साम्राज्य विभिन्न वर्गों के सांस्कृतिक जीवन में सुनियोजित रूप से पैठना और प्रभुत्व जमाना, ताकि उत्पीड़न जनता के मूल्य, आचरण, संस्थाओं और पहचान को साम्राज्यवादी वर्गों के हितों के अनुकूल बनाया जा सके। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने ''परम्परागत'' और आधुनिक दोनों ही रूपों को अपना लिया है। पिछली शताब्दियों में चर्च, शिक्षा व्यवस्था और लोक-अधिकारियों ने दैवी अथवा निरपेक्षतावादी सिद्धांतों की आड़ में मूलनिवासी जनता के मन में पराधीनता और स्वामिभक्ति की भावना भरने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के ये 'परम्परागत' तंत्र को काम कर रही हैं, समसामयिक संस्थाओं में जड़ जमाए नए आधुनिक उपकरण भी साम्राज्यवादी प्रभुत्व के लिए महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। जन-माध्यम, प्रचार-प्रसार, विज्ञापन तथा लौकिक मनोरंजनकर्ता और बुद्धिजीवी आजकल प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। आज की दुनिया में वैटिकन, बायबिल या नेताओं के शब्दाडम्बर की तुलना में हॉलीउड, सीएनएन और डिजनीलैंड कहीं ज्यादा प्रभावकारी हैं।

सांस्कृतिक घुसपैठ का राजनीतिक-सामरिक प्रभुत्व और आर्थिक शोषण से गहरा रिश्ता है। अमेरिका ने अपने आर्थिक हितों के रक्षक दक्षिण अमेरिकी नरसंहारकर्ता शासकों के समर्थन के लिए फौजी हस्तक्षेप के साथ वहां प्रचण्ड सांस्कृतिक घुसपैठ भी किया। अमेरिकी पैसे पर पलने वाले धर्म प्रचारक भारतीय गांवों में धावा बोलकर जनजातिय किसानों के दिमाग में पराधीनता का संदेश भरते हैं। ''लोकतंत्र और बाजार'' पर चर्चा करने के लिए पालतू बुद्धिजीवियों की अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस प्रायोजित की जाती है। पलायनवादी टेलीविजन कार्यक्रम ''किसी और दुनिया'' के भ्रमजाल दिखाते हैं। सांस्कृतिक घुसपैठ, गैर फौजी साधनों के जरिए प्रति-विद्रोह के युद्ध कौशल का प्रसार है।

समकालीन सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की कार्यप्रणाली पहले से कई मायने में भिन्न है :-

1. केवल अभिजात्यों को अपने अनुरूप ढालने के बजाय, यह व्यापक जनसमुदाय को अपनी गिरफ्त में ले लेने पर आमादा है।

2. जन संचार माध्यम, खास कर टेलीविजन पूरे परिवार में घुसपैठ करता है और केवल ''बाहर से'' और ऊपर-ऊपर ही नहीं, बल्कि ''अन्दर'' और ''गहराई'' से भी प्रभाव डालता है।

3. सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का विस्तार विश्वव्यापी है और यह हर जगह एक समान असर डालता है। सार्वभौमिकता का ढोंग साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रतीकों, उद्देश्यों और स्वार्थों को छुपाने में सहायक होता है।

4. सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के हथियार के रूप में जन संचार माध्यम आज नाम मात्र के लिए ही ''निजी'' है। राजसत्ता के साथ औपचारिक गठजोड़ का न होना, ''समाचार'' और ''मनोरंजन'' के नाम पर साम्राज्यवादी राजसत्ता के हितों को प्रक्षेपित करने वाले निजी संचार माध्यमों के लिए एक वैधानिक आवरण का काम करता है।

5. समकालीन सम्राज्यवाद के राजनीतिक स्वार्थों को प्रक्षेपित करने के लिए गैर-साम्राज्यवादी विषयों का सहारा लिया जाता है। उनके 'न्यूज रिपोर्ट' मध्य अमेरिका के भाड़े के किसान-सैनिकों के व्यक्तिगत जीवनी और खाड़ी युद्ध के दौरान हंसते खिलखिलाते काले अमेरिकी राजदूतों को फोकस करते हैं।

(व्यक्तिगत छवियों के जरिए राजसत्ता द्वारा बड़े पैमाने पर की जाने वाली हत्याओं पर उसी तरह पर्दा डाला जाता है, जिस तरह तकनीकीशाही शब्दाडम्बर भारी विध्वंसक हथियारों का औचित्य सिद्ध करते हैं 'इंटेलिजेन्ट बम'। 'जनतंत्र' के युग में अपने हमले को न्यायोचित ठहराने के लिए साम्राज्यवादी देशों की वास्तविकता को झुठलाना जरूरी है। इसलिए वे हमलावरों को उत्पीड़ित और उत्पीड़ितों को हमलावरों के रूप में चित्रित करते हैं। जब अमेरिका ने पनामा के मेहनतकश-समुदाय और उनके जनसंचार माध्यमों ने पनामा को अमेरिकी नौजवनों के लिए नशीली दवाओं के खतरे के रूप में प्रोजेक्ट किया)

6. ज्यों-ज्यों अनियंत्रित पूंजी के अधीन शांति और खुशहाली के झूठे वादों तथा बढ़ती बदहाली और हिंसा की हकीकत के बीच खाई बढ़ती जा रही है, त्यों-त्यों जन संचार माध्यम अपने कार्यक्रमों में किसी वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य की गुंजाइश और अधिक कम करते जा रहे हैं। एक तरफ मुक्त बाजार के भ्रामक वादों और वास्तव में मौजूद पूंजीवाद की पाशविकता के बीच कोई मेल नहीं है, तो दूसरी तरफ है संपूर्ण सांस्कृतिक नियंत्रण। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

7. सामूहिक प्रतिवाद को कमजोर बनाने के लिए सांस्कृतिक उपनिवेशवाद राष्ट्रीय पहचान को या तो ध्वस्त करता है, या उसकी समृद्ध आर्थिक-सामाजिक अन्तर्वस्तु को निष्कासित कर उसे खोखला बना देता है। सामूहिक एकजुटता में फूट डालने के लिए सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ''आधुनिकता'' की ऐसी भक्ति का प्रवर्तन करता है, जो विदेशी प्रतीकों को मजबूत बनाता हो।

''व्यक्तिवाद'' के नाम पर सामाजिक बंधनों पर प्रहार किया जाता है और संचार माध्यमों के संदेशों के अनुसार व्यक्तित्वों को नए सिरे से ढाला जाता है। एक ओर साम्राज्यवादी अस्त्र-शस्त्र वैधानिक संस्थाओं को छिन्न-भिन्न करते हैं और उनके बैंक अर्थव्यवस्थाओं की लूटपाट करते हैं, वहीं दूसरी ओर साम्राज्यवादी मीडिया व्यक्तियों को पलायनवादी पहचान मुहैया करते हैं।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद अपने विरोधी क्रांतिकारियों के व्यक्तियों का विध्वंस करने के लिए उनका पैशाचिक उपहार-चित्र पेश करता है, जबकि पश्चिम-समर्थक देशों में की गई भारी हिंसा को लोगों की स्मृतियों से मिटा देने का भरपूर प्रयास करता है। पश्चिमी मीडिया अमेरिका समर्थक कम्युनिस्ट-विरोधी शासकों द्वारा ग्वाटेमाला में एक लाख आदिवासियों, अलसल्वाडोर में पचहत्तर हजार श्रमिकों और निकारागुआ में पचास हजार लोगों की हत्या किए जाने के संबंध में कभी भी अपने दर्शकों को याद नहीं दिलाता। हां, मीडिया द्वारा उस महाविपदा का प्रसारण अवश्य होता है, जो पूर्वी यूरोप और पूर्व सोवियत संघ के बाजार अर्थव्यवस्था लागू किए जाने का परिणाम है और जिसने लाखों लोगों को कंगाल बना दिया है।

प्रचार और पूंजी संचय

जन संचार माध्यम अमेरिकी पूंजी के लिए दौलत और ताकत अर्जित करने का एक प्रमुख स्रोत है, क्योंकि इसने पूरी दुनिया में अपना संचार नेटवर्क फैला लिया है। जरूरी संचार माध्यमों के जरिए दौलत बनाने वाले अमेरिकी धनाढ्यों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। 400 सर्वाधिक धनी अमेरिकियों ने जनसंचार माध्यम के जरिए दौलत कमाने वालों की संख्या 1982 में 9.5 प्रतिशत थी, जो 1989 में बढ़कर 18 प्रतिशत हो गई। आज हर पांचवां अमेरिकी धनाढ्य जन संचार माध्यम के जरिए कमाई कर रहा है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने अमेरिका में दौलत और प्रभाव के एक साधन-कारखाने में बने माल (मैन्युफैक्चरिंग) को पीछे छोड़ दिया है।

जन संचार माध्यम आज राजनीतिक एवं सामाजिक नियंत्रण की विश्व-व्यापी अमेरिकी व्यवस्था का अविभाज्य अंग और साथ ही साथ मुनाफे का एक प्रमुख साधन हो गया है। ज्योंही तीसरी दुनिया में शोषण, विषमता और दरिद्रता का स्तर बढ़ता है, पश्चिम-नियंत्रित जनसंचार माध्यम संकटग्रस्त जनता को एक निष्क्रिय समूह में तब्दील करने में जुट जाते हैं। पश्चिमी मीडिया के विख्यात और व्यापक मनोरंजन कार्यक्रम राजनीतिक असंतोष की संभावनाओं को विचलित करने वाले महत्वपूर्ण उपादान बन गए हैं। रीगन ने अपने शासनकाल में अत्यंत लोकप्रिय और घोर प्रतिक्रियावादी मनोरंजन कार्यक्रमों के जरिए मीडिया की प्रपंच की प्रधानता को विशेष महत्व दिया और इस परिघटना को लातिन अमेरिका और एशिया तक विस्तारित किया।

लातिन अमेरिका में टेलीविजन सेटों की संख्या में वृद्धि तथा वहां के निवासियों की आय में गिरावट और जन संघर्षों में कमी के बीच सीधा संबंध है। लातिन अमेरिका में 1980 से लेकर 1990 के बीच प्रति परिवार टेलीविजन सेटों की संख्या में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि वास्तविक औसत आय में 40 प्रतिशत की गिरावट आई तथा वहां टेलीविजन द्वारा बनाई गई छवियों पर बुरी तरह निर्भर नव-उदार राजनीतिक उम्मीदवारों का जमघट का एक सरगना राष्ट्रपति पद का चुनाव जीत गया।

क्रमशः